{deX g§^dZmW {dYmZ

मध्य में	-	ॐ
प्रथम	-	4
द्वितीय	-	8
तृतीय	-	16
चतुर्थ	-	32
पञ्चम	-	64

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद संभवनाथ विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति पंचकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण - प्रथम - 2010 प्रतियाँ -1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - ब्र. सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन - (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008 फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस, मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु - 21/- रु.

- अर्थ सौजन्य :-

* श्री नरेन्द्रकुमार मनोजकुमार जैन (करवर वाले) 7-डी-31, महावीर नगर -II, कोटा, फोन - 2475169, 9413186111
* श्री त्रिलोक जैन, 9-महावीर नगर-II, कोटा फोन - 2423982, 9414741415
* श्री कैलाशजी मारवाड़ा, एडवोकेट विकास जैन (सी.ए.) कोटा
* श्री महेन्द्र जैन (कर सलाहकार) सीता, निर्मला मारवाड़ा, बूँदी (राज.)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

कृति – **विशद संभवनाथ विधान**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम – 2010 प्रतियाँ –1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141–2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला–सागर (म.प्र.)
फोन : 07581–274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए–107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु – 21/– रु.

– अर्थ सौजन्य :–

* श्री संभवनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, शिवाजी पार्क, अलवर
* श्रीमती अंजूदेवी जैन धर्मपत्नी श्री हरीशचंद जैन (धनवाड़ा वाले) धूपदशमी उद्यापन के उपलक्ष्य में (अगस्त-2008), तिजारा फाटक बाहर, शिव कॉलोनी, अलवर
* श्री केदारचन्द अक्षयकुमार जैन - 429, विजय नगर, अलवर
* श्री हेमचंद जैन - 2 क-173/174, शिवाजी पार्क, अलवर
* श्री घनश्याम जैन अभिषेक जैन - ए-130-डी, कर्मचारी कॉलोनी, अलवर
* श्री कमलचन्द जैन जितेन्द्र जैन - 5-ख-2, प्रताप नगर, मनु मार्ग, अलवर

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यह्न **ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा- **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा- नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

संभवनाथ स्तवन

(शम्भू छन्द)

संभवनाथ जिनेश्वर जग में, संभव करते सारे काम।
चरण शरण को जो पा लेता, उसको मिलते चारों धाम।।
इन्द्रादि से वन्दनीय हैं, ऋषियों से भी पूज्य त्रिकाल।
कर्म बन्ध से रहित हुए हैं, सभी काटते कर्म कराल।।1।।
दिनकर किरण तिमिर को जैसे, कर देती निर्मूल अहा।
देह कांति का तीन लोक में, फैला श्रेष्ठ प्रकाश रहा।।
बाह्य तिमिर की नाशक रवि की, कांति फैले चारों ओर।
ज्ञान दीप की अतिशय आभा, करती जग को भाव-विभोर।।2।।
अद्भुत परम तेज के धारी, श्री जिनेन्द्र हैं परम पवित्र।
सर्व जगत् से भिन्न हैं लेकिन, हैं जिनेन्द्र जन-जन के मित्र।।
श्री जिनेन्द्र जिनवर का शासन, तीन लोक में रहा महान्।
जिन शासन का धारी बनता, सर्व लोक में सर्व प्रधान।।3।।
पाप और पापी इस जग के, प्रभु से रहते हरदम दूर।
चरण-शरण में आते हैं जो, शुभ भावों से हों भरपूर।।
भव्य जीव चरणों में नत हो, करते बार-बार यशगान।
पावन कर दो मेरा भी मन, करुणाकर मेरे भगवान।।4।।
सारे जग में गूँज रही है, तव वाणी की शुभ झंकार।
तन-मन-धन के स्रोत प्राप्त हों, तव अर्चा से अपरम्पार।।
तुम हो एक अलौकिक स्वामी, भवि जीवों के तारणहार।
अतः विशद तव चरण हृदय में, धारण करते मंगलकार।।5।।

दोहा- सम्भव जिन की भक्ति से, होते सारे काम।
सुख-शांति सौभाग्य शुभ, पाने विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री संभवनाथ पूजन

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक जल के कलश भराए, चरण चढ़ाने को हम लाए।
जन्म जरा मृत्यु भयकारी, नाश होय प्रभु शीघ्र हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर लाए, चरण शरण में हम भी आए।
विशद भावना हम यह भाए, भव संताप नाश हो जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत थाल भराए, जिन अर्चा को हम ले आए।
हम भी अक्षय पद पा जाएँ, चतुर्गति में न भटकाएँ।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चावल रंग कर पुष्प बनाए, हमको जरा नहीं वह भाए।
यहाँ चढ़ाने को हम लाए, काम वासना मम नश जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस यह नैवेद्य बनाए, बार-बार खाके पछताए।
क्षुधा शांत न हुई हमारी, नाश करो तुम हे ! त्रिपुरारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप जलाए, यहाँ आरती करने लाए।
छाया मोह महातम भारी, उससे मुक्ति होय हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध करते हम आए, भव-भव में कई दुःख उठाए।
धूप जलाने को हम लाए, कर्म नाश करने हम आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय हमने न पाया, तीन लोक में भ्रमण कराया।
सरस चढ़ाने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सम्भव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग-जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रभु, जन्मे सम्भव जिन तीर्थेश।
न्हवन और पूजन करवाये, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिनवर मुक्ति पाए, हम चरणों में शीश झुकाए।।
प्रभु चरणों हम अर्घ्य चढ़ाते, शुभ भावों से महिमा गाते।
हम भी मोक्ष कल्याणक पाएँ, अन्तिम यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **सम्भव नाथ जिनेन्द्र के, चरणों में चितधार।**
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार।।

(छन्द चामर)

पूर्व पुण्य का सुफल, जिनेन्द्र देव धारते।
तीर्थंकर श्रेष्ठ पद, आप जो सम्हालते।।
पुष्प वृष्टि देव आन, करते हैं भाव से।
जन्म समय इन्द्र सभी, न्हवन करें चाव से।।
चिन्ह देख इन्द्र पग, नाम जो उच्चारते।
जय जय की ध्वनि तब, इन्द्र गण पुकारते।।
क्षुद्र सा निमित्त पाय, संयम प्रभु धारते।
चेतन का चिन्तन शुभ, चित्त से विचारते।।
विश्व वन्दनीय जो, पाप शेष नाशते।
ॐकार रूप दिव्य, देशना प्रकाशते।।
श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्ञेय, सर्व लोक जानते।
द्रव्य तत्त्व पुण्य पाप, धर्म को बखानते।।
सर्व दोष भागते हैं, दूर-दूर आपसे।
सर्व दुःख दूर हों, आप नाम जाप से।।
आप सर्व लोक में, अनाथ के भी नाथ हो।

ध्यान करें आपका, उन सबके तुम साथ हो।।
इन्द्र और नरेन्द्र और, गणेन्द्र आपको भजैं।
सर्वलोक वर्ति जीव, चरण आपके जजैं।।
आपके चरणारविन्द, में करूँ ये प्रार्थना।
तीन काल आपकी, प्राप्त हो आराधना।।
हे जिनेन्द्र ! ध्यान दो, ज्ञान दो वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, प्रार्थना पे ध्यान दो।।
लोक यह अनन्त है, अनन्त का न अन्त है।
जीव ज्ञानवन्त है, शक्ति से भगवन्त है।।
ज्ञान का प्रकाश हो, मोह तिमिर नाश हो।
स्वस्वरूप प्राप्त हो, स्वयं में निवास हो।।
धर्म शुक्ल ध्यान हो, आत्मा का भान हो।
सर्व कर्म हान हो, स्वयं की पहचान हो।।
घातिया हों कर्म नाश, होय ज्ञान का प्रकाश।
अष्ट गुण प्राप्त कर, शिवपुर में होय वास।।
भावना है यह जिनेश, और नहीं कोई शेष।
धर्म जैन है विशेष, सब अधर्म है अशेष।।

(छन्द घत्तानन्द)

सम्भव जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के पथगामी।
शिवपुर के वासी, ज्ञान प्रकाशी, त्रिभुवन पति हे जगनामी!।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पुष्प समर्पित कर रहे, जिनवर के पदमूल।
मोक्ष महल की राह में, हो जाओ अनुकूल।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा- अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, हुए श्री के नाथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

ज्ञानावर्ण कर्म के नाशी, जान रहे हैं लोकालोक।
ज्ञानानन्त प्रभुजी पाए, इन्द्र चरण में देते ढ़ोक।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं **अनन्तज्ञान** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक द्रव्यषट् गतियाँ, देख रहे जो भली प्रकार।
कर्म दर्शनावर्ण नाशकर, दर्शानन्त पाए मनहार।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं **अनन्तदर्शन** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोह मिथ्या कषाय का, नाश किए हैं जिन अर्हन्त।
सुख अनन्त को पाने वाले, हुए लोक में जिन भगवन्त।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं **अनन्तसुख** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, प्राप्त किए हैं वीर्य अनन्त।
ज्ञानादि सद्गुण के धारी, आप बने जग में गुणवन्त।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं **अनन्तवीर्य** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय पाने वाले, हुए लोक में आप महान्।
कर्म घातिया नाश किए फिर, बने लोक में आप प्रधान।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं **अनन्तचतुष्टय** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- प्रातिहार्य प्रगटाए हैं, पाकर केवलज्ञान।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छंद)

तरु अशोक तल में भगवान, उज्ज्वल तन अति शोभावान।
मेघ निकट दिनकर के होय, उस भाँति दिखते प्रभु सोय।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं **अशोक तरु** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय सिंहासन पर देव, तव मन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप, उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं **सिंहासन** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष, स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरु पर बहती धार, स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं **चतुःषष्ठि चँवर** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र तिय लोक समान, मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश, श्री जिन के गुण करें प्रकाश।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं **छत्रत्रय** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर, जय घोषक जिनवर की धीर।
तीन लोक में अति सुखदाय, सुयश दुन्दुभि बाजा गाय।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं **दुन्दुभि** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद मरुत गंधोदक सार, सुर-गुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरे, पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरे।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं **पुष्पवृष्टि** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग कांति फीकी पड़ जाय, भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय, सारे जग का आतप खोय।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं **भामण्डल** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय, द्रव्य तत्त्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप, ॐकार सब भाषा रूप।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं **दिव्य ध्वनि** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य प्रगटाए अष्ट, मिटा रहे इस जग के कष्ट।
प्रभु की भक्ति अपरम्पार, करने वाली भव से पार।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- सोलह विद्या देवियाँ, पूजा करें विशाल।
भक्ति भाव से वंदना, जिन पद करें त्रिकाल।।

(तृतीय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

श्री जिनेन्द्र की रही सेविका, देवी रहा रोहणी नाम।
विद्या देवी प्रथम कहाई, है प्रभावना जिसका काम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री रोहिणीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्व वाहिनी श्रेष्ठ सुन्दरी, प्रज्ञप्ती है जिसका नाम।
जिन अर्चा करने में तत्पर, रहती है जो आठों याम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्रज्ञप्तिदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज वाहन है जिसका अनुपम, वज्र श्रृंखला है शुभ नाम।
चतुर्दिशा के विघ्न विनाशे, चतुर्भुजा युत करें प्रणाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वज्रश्रृंखलादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रांकुश है कमल वासिनी, जिन रक्षा है जिसका काम।
ब्रह्मचारिणी वत् सात्विक है, जिनपद में नित करे प्रणाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वज्रांकुशादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनशासन की भक्त जामुन्दा, अप्रतिचक्रा भी है नाम।
जिनशासन रक्षा में तत्पर, जरा नहीं लेती विश्राम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अप्रतिचक्रादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य करे पुरुषार्थ भाव से, जिन पूजा में आठों याम।
रूप सुन्दरी देवी अनुपम, श्रेष्ठ पुरुषदत्ता है नाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पुरुषदत्तादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण श्याम है जिसके तन का, काली देवी जिसका नाम।
भक्त वत्सला है जिनेन्द्र की, सिंहवाहिनी करे प्रणाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री कालीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनुष बाण लेकर चलती है, खड्ग शोभता जिसके हाथ।
फल अर्पित कर महाकाली जिन, चरणों नित्य झुकाए माथ।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभु का शुभ गुणगान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महाकालीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

गौरी गौर वर्ण की जानो, जिनशासन की रक्षक मानो।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गौरीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म गांधारी धारे, खड्ग ढाल निज हाथ सम्हारे।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गांधारीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्वालामालिनी नाम बताया, मेढ़ा वाहन जिसका गाया।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ज्वालामालिनीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवी श्रेष्ठ मानवी जानो, धर्म रक्षिका जिसको मानो।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री मानवीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बैरोटी विघ्नों को नाशे, जैन धर्म को नित्य प्रकाशे।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री बैरोटीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम अच्युता प्यारा-प्यारा, जिसने जैन धर्म को धारा।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अच्युतादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवी कही मानसी प्यारी, नाग है जिसकी श्रेष्ठ सवारी।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री मानसीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामानसी नाम बताया, हंसवाहिनी जिसको गाया।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महामानसीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोलह विद्या देवियाँ, विघ्न करें सब दूर।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, भावों से भरपूर।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री षोडश विद्यादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- सौधर्मादि देव सब, इन्द्र प्रतीन्द्र महान्।
लौकान्तिक भी जिन प्रभु, का करते गुणगान।।

(चतुर्थ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा-छन्द)

सौधर्मेन्द्र स्वर्ग से चलकर, ऐरावत पर आवे।
विशद भाव से सम्भव जिनपद, श्रीफल श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्म इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजारुढ़ ईशान इन्द्र शुभ, पूंगी फल ले आवे।
विशद भाव से सम्भव जिनके, पद में श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ईशान इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सनत इन्द्र सुकुण्डल मण्डित, सिंहारुढ़ हो आवे।
आम्र फलों के गुच्छे लाकर, चरणों श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सनतकुमारइन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वारुढ़ माहेन्द्र इन्द्र भी, केले लेकर आवे।
विशद भाव से सम्भव जिन के, पद में श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री माहेन्द्र इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हंस पे चढ़कर ब्रह्म इन्द्र भी, पुष्प केतकी लावे।
विशद भाव से सम्भव जिन के, पद में श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ब्रह्मेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य फलों के थाल सजाकर, लान्तवेन्द्र पद आवे।
विशद भाव से चरण कमल की, अर्चा कर हर्षावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री लान्तवेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र चकवा पर चढ़कर, पुष्प सेवन्ती लावे।
विशद भाव से चरण कमल की, अर्चा कर हर्षावे।।

संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शुक्रेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र कोयल वाहन पर, चढ़कर जिनपद आवे।
नील कमल के गुच्छे लाकर, चरणों श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शतारेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गरुड़ारुढ़ इन्द्र आनत पद, पनस फलों को लावे।
निज परिवार सहित भक्ति से, पूजा कर हर्षावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आनतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारुढ़ भक्ति से, प्राणतेन्द्र भी आवे।
तुम्बरु फल लाकर के अनुपम, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र चढ़ कुमुद यान पर, गन्ने लेकर आवे।
निज परिवार सहित भक्ति से, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आरणेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, धवल चँवर ले आवे।
चौसठ चँवर ढुरावे पद में, गीत भक्ति के गावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अच्युतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग के प्रतीन्द्र

(जोगीरासा-छन्द)

प्रति इन्द्र सौधर्म स्वर्ग से, जिन अर्चा को आवे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, मन में बहु हर्षावे।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्म प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र ईशान स्वर्ग से, आके पूज रचावे।
अष्ट द्रव्य लेकर हाथों में, खुश हो नाचे गावे।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ईशान प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र सानत कुमार भी, भाव सहित गुण गावे।
पूजा करके श्री जिनेन्द्र की, चरणों शीश झुकावे।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सानतकुमार प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र माहेन्द्र स्वर्ग से, द्रव्य संजोकर लावे।
पूजा करे भाव से आके, नाचे हर्ष मनावे।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री माहेन्द्र प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र ब्रह्मोत्तर आके, पूजा श्रेष्ठ रचावे।
निज परिवार सहित भक्ति से, नाच-नाच गुण गावे।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ब्रह्मोत्तर प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र कापिष्ठ स्वर्ग से, दिव्य पदारथ लावे।
नव कोटी से भाव बनाकर, महिमा गाने आवे।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री कापिष्ठ प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशुक्र आवे प्रतीन्द्र भी, अतिशय भक्ति बढ़ावे।
चरण कमल की अर्चा करके, भक्ति में खो जावे।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महाशुक्र प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्रार आके प्रतीन्द्र जिन, चरण कमल को ध्यावे।
करे अर्चना निज शक्ति से, सादर शीश झुकावे।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सहस्रार प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

आनत स्वर्ग वासी प्रतीन्द्र जिन, चरण कमल में आता है।
पूजा करता है भक्ति से, जिनवर के गुण गाता है।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आनत प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणत स्वर्ग वासी प्रतीन्द्र शुभ, द्रव्य सजाकर लाता है।
निज परिवार सहित पूजा कर, चरणों शीश झुकाता है।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणत प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरण स्वर्ग वासी प्रतीन्द्र निज, वाहन साथ में लाता है।
शक्तिसः पूजा अर्चा कर, पावन द्रव्य चढ़ाता है।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आरण प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणत स्वर्गवासी प्रतीन्द्र निज, वाहन साथ में लाता है।
दर्शन करते ही जिनवर का, चरणों में झुक जाता है।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणत प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देव

ब्रह्मलोक वासी सारस्वत, देव प्रभु चरणों आवें।
जिनवर के वैराग्य समय पर, अनुमोदन कर सुख पावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सारस्वत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक आदित्य देव शुभ, जिन अर्चा करने आवें।
दिनकर की भाँति पूरब में, अपनी आभा बिखरावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आदित्य देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि देव आग्नेय कोण से, भाव बनाकर के आवें।
ब्रह्मलोक में रहने वाले, ब्रह्म ऋषि शुभ कहलावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्नि देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरुण देव लौकान्तिक भाई, आके जिनपद झुक जावें।
कर प्रणाम चरणों में प्रभु के, नित्य नये मंगल गावें।।

भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरुण देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्दतोय लौकान्तिक आके, करते वन्दन बारम्बार।
भव्य भावना बारह भाते, प्रभु के चरणों में शुभकार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गर्दतोय देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुषित देव लौकान्तिक भाई, गुण गाते हैं मंगलकार।
ब्रह्मऋषि कहलाने वाले, करें अर्चना अपरम्पार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री तुषित देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध सभी बाधाएँ, करते हैं आकर के दूर।
लौकान्तिक यह देव प्रभु, की भक्ति करते हैं भरपूर।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अव्याबाध देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवारिष्ट कहे लौकान्तिक, ब्रह्मलोक वासी शुभकार।
उत्तर दिशा से आने वाले, वन्दन करते बारम्बार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरिष्ट देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश इन्द्र प्रतीन्द्र साथ ही, लौकान्तिक भी अष्ट प्रकार।
जिनपूजा भक्ति में तत्पर, रहते हैं जो बारम्बार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चढ़ा रहे हैं हम अभिराम।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **इन्द्र, प्रतीन्द्र, लौकान्तिक देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- इन्द्र भवन वासी तथा, व्यन्तर नवग्रह देव।
द्वारपाल तिथि देव सब, जिनपद झुकें सदैव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, असुर कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, जिन पूजा को आता है।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **असुरकुमार इन्द्र** ! पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, नाग कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, जिन पूजा को आता है।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **नागकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, विद्युत कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, जिन पूजा को आता है।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **विद्युतकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, सुपर्ण कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, जिन पूजा को आता है।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **सुपर्णकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, अग्नि कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ति से, जिन पूजा को आता है।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **अग्निकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, वात कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **वातकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, स्तनित कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **स्तनितकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, उदधि कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **उदधिकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, दीप कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **दीपकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, दिक् कुमार कहलावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **दिक्कुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

द्वितीय इन्द्र असुर देवों के, भवनालय से आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **असुरदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय नागकुमार इन्द्र भी, जिन चरणों में आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **नागकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय विद्युत देव कुमार शुभ, जिन अर्चा को आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **विद्युतदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्ण कुमार देव द्वितिय भी, जिनवर के गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **सुपर्णकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि कुमार देव द्वितिय जिन, चरण शरण में आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **अग्निकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

वात कुमार देव जिन चरणों, सुरभित पवन बहावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **वातकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय स्तनित कुमार शरण में, नित प्रति मंगल गावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **स्तनितकुमार !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय उदधि कुमार मेघ से, रिमझिम जल बरसावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **उदधिकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय दीप कुमार देव शुभ, जग-मग ज्योति जगावे।
अष्ट द्रव्य का का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **दीपकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय दिक्कुमार जिन चरणों, भाव सहित सिरनावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **दिक्ककुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर इन्द्रों से पूज्य जिनेन्द्र (शम्भू छन्द)

निज परिवार सहित व्यन्तर के, किन्नरेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **किन्नरेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, इन्द्र किम्पुरुष आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **किम्पुरुष देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, महोरगेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, गन्धर्वेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **गन्धर्वेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, यक्ष इन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **यक्ष इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, राक्षसेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **राक्षसेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, भूत इन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **भूत इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, पिशाच इन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **पिशाच इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
निज परिवार सहित भक्ति कर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **किम्पुरुषेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नर देव वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **किन्नरदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
अन्य श्रेष्ठ देवों को लाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, अर्चा कर गुण गाते हैं।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **गन्धर्व इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र व्यन्तर देवों के, द्वितीय भी गुण गाते हैं।
पूजा करके नृत्य गानकर, मन ही मन हर्षाते हैं।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **यक्ष इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस देव वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
अपनी वृत्ति छोड़ भक्ति से, पूजा कर गुण गाते हैं।।34।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **राक्षस देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र व्यन्तर देवों के, द्वितीय भी गुण गाते हैं।
हर्ष भाव से पूजन करके, अतिशय द्रव्य चढ़ाते हैं।।35।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **भूत इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र व्यन्तर देवों के, द्वितीय भी गुण गाते हैं।
सुन्दर रूप बनाकर जिनपद, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।36।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **पिशाच इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवग्रह द्वारा पूज्य श्री जिनेन्द्र *(शम्भू छन्द)*

सतत् प्रकाश ताप प्रतिभाषी, रवि विमान का है आधीश।
पल्योपम आयु का धारी, कमल हाथ ले नत हो शीश।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा करता, सूर्य महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।37।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **आदित्य देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख वर्ष पल्लाधिक आयु, बलक्षरोचि शुभ आभावान।
महारत्नकृतोद्‌ध भेषयुत, श्रेष्ठ ग्रहाधिप रहा महान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, सोम महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।38।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **सोम देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरोह्यमान आकार मृगाधिक, अर्ध कोषाश्रित प्रभु विमान।
अर्ध पल्य आयु के धारी, यक्षाश्रित सुकुमार महान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, मंगल ग्रह जिनपद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।39।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **मंगल देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकपूज्य सत्त्वोहित केहरि, केन्द्र त्रिकोणे जन सुखकार।
अर्घ्य भेंट कर पुष्टिकर्त्ता, सोम पुत्र है मंगलकार।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, बुधग्रह भावसहित जिनपद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।40।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **बुध देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेंट ग्राही सुर राजमंत्री, स्वर्ग लोक में रहा महान्।
पयः प्रपूरित घृत संतुष्टक, वियत विहारी श्रेष्ठ प्रधान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, गुरु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।41।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **गुरु देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाम हस्त में रहा कमण्डल, शुचि दण्डधारी गुणवान।
सव्य पाण कविराज मुख्य है, जिसके वस्त्र सुधौत महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, शुक्र महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।42।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **शुक्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है रजनीश शत्रु छाया सुत, सूर्य खचारि पुत्र महान्।
कृष्ण वर्ण अष्टारिग सज्जन, सौख्यकार अतिशय गुणवान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, शनि महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।43।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **शनि देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि बिम्ब को छठे मास में, प्रच्छादित करता है आन।
निज के बिम्ब से परिवर्तित कर, हो स्वभाव से तुष्ट महान्।।

श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, राहु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।44।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **राहु देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वियद् बिहारी पुण्य कृष्ण ध्वज, एकादशस्थ है छायावान।
कृष्ण वर्णधारी है अनुपम, सभवन पूज्य है आभावान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, केतु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।45।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **केतु देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुःद्वारपाल द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

सोम इन्द्र कोदण्ड काण्ड ले, स्फुट दृष्टि मुष्टीधारी।
भव्य मरुदभट वेद्या जानो, कथानुरक्त महिमाकारी।।
पुरोद्धार पुरु के उद्धारक, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।46।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **सोमदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शत्रु को दण्डित करते, धारण करते दण्ड महान्।
पास रहे सुर चण्डदेव कई, देते हैं जो करुणादान।।
निज परिवार सहित यमेन्द्र तुम, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।47।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **यमदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हालाहल भाला ज्वाला अरु, जटा आदिभीला अहिवास।
वीर सुरों की सेना लेकर, पश्चिम द्वार में करो निवास।।
वरुण इन्द्र परिवार सहित आ, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।48।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **वरुणदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु लोक आकम्पित जिनसे, गदा आदिधारी कई देव।
लोकाक्रम उत्ताल सुरो से, उत्तर दिश में रहे सदैव।।
हे कुबेर ! परिवार सहित तुम, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।49।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **कुबेरदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथिदेवता द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

(शम्भू छन्द)

धनुष बाण ले यक्ष प्रतिपद, प्रतिपक्ष प्रभु पद आवे।
धवलोज्ज्वल शुभ कांति वाला, पद्म अर्चना को लावे।।50।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **यक्षदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षमालधारी त्रिशूल ले, वैश्वानर सुर सूर्य समान।
गजारुढ़ हो द्वितीय तिथि को, करता आके प्रभु गुणगान।।51।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **वैश्वानर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वयान पर राक्षस चढ़कर, मुसलाखेट खट्वांग समेत।
खिला कमल ले तृतीय तिथि को, भाव सहित पूजा के हेत।।52।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **राक्षस देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुत आभावाला नधृत, जलज भयासि खेट महान्।
व्याघ्रारुढ़ चतुर्थी के दिन, फलादान करता गुणगान।।53।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **मारुत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरत चंद्र की कांति वाला, सर्पासन पर पन्नग देव।
श्रृणि पाश ले हाथ पंचमी, के दिन अर्चा करे सदैव।।54।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **पन्नग देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कशांकदान डमरू फरीम कुश, खड्ग अक्षमाला के साथ।
नंदा अधिपति असुर षष्ठी को, पूजे शत्रु पत्र ले हाथ।।55।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **असुर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेणु प्रकाश सप्तमी के दिन, अश्वारूढ़ देव सुकुमार।
पाशांकुश फल भोज हाथ ले, वंदन करता बारम्बार।।56।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **सुकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले कृपाण फल खेट हाथ में, अर्चा करने पितृ देव।
जगतपति आठें को आवे, प्राणी रक्षा करे सदैव।।57।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **पितृदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शूल कपाल नेत्र त्रयधारी, उदित सूर्य सम करे प्रकाश।
श्री विश्वमाली नवमी को, जिन पूजा करता है खास।।58।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **विश्वमाली देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेट बाण खड्गोज्ज्वलधारी, मन में अतिशय करुणाधार।
पूर्णाधिप द्वितीय दशमी को, चमर मोर पर हुआ सवार।।59।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री चमर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनुष बाण तलवार खेट ले, हो प्रसन्न कर ऊपर हाथ।
एकादशि का ईश वैरोचन, भक्ति सहित झुकावे माथ।।60।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **वैरोचन देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हंसारुढ़ महाविद्युत भी, इन्द्र वर्ण सम जोड़े हाथ।
धनुष बाण पूत्री कृपाण ले, द्वादशेन्द्र अर्चा को साथ।।61।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **महाविद्युत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारदेव चढ़कर गवेन्द्र पर, चन्द्र खड्ग फल ले निज हाथ।
त्रयोदशाधिप वर्ण नीले में, अर्चा को द्रव्य लावे साथ।।62।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **मारदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुदगरांक फल गदा कुठारी, चतुर्दश्यधिपति ले हाथ।
चढ़ गवेन्द्र पर नील वर्ण में, विश्वेश्वर पद टेके माथ।।63।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **विश्वेश्वर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमनीय वदन बाणामय पाशी, दण्डपत्र कोदण्ड ले हाथ।
पिण्डाशन पश्चादश तिथि को, अर्चा करे झुकाए माथ।।64।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **पिण्डाशन देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस इन्द्र भवनालय वासी, सोलह व्यन्तर वासी देव।
पन्द्रह तिथि देवता नवग्रह, द्वारपाल भी चार सदैव।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा भक्ति, करते हैं अतिशय गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन चरणों में, हम भी करते मंगलगान।।65।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **भवनवासी, व्यन्तर, नवग्रह, तिथिदेव, द्वारपाल देव** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं अनन्तचतुष्टय प्राप्त अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सम्भवनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो हैं अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत् इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी भूप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्न देव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती वन के अविकारी।

जयमाला

दोहा- जिनपूजा से भक्त का, कटे कर्म का जाल।
संभवनाथ जिनेन्द्र की, गाते हम जयमाल।।

(तर्ज : शेर छन्द)

जय-जय जिनेन्द्र आपकी महिमा अपार है, संसार में कोई जीव नहीं पाए पार है।
करते हैं पूर्व भव में संयम की साधना, अर्हन्त सिद्ध प्रभु की करते आराधना।।
जो पुण्य के सुफल से जिनधर्म धारते, मानव गति को पाकर जीवन सम्हारते।
कई भव में पुण्य संचित करते हैं जो अरे, तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध फिर जीव वह करे।।
स्वर्गों से देव आके नगरी को सजाते, करते हैं रत्नवृष्टि अत्यन्त हर्षाते।
गर्भादि पंचकल्याणक आ करके मनाते, करते प्रभु की अर्चा सौभाग्य जगाते।।
फाल्गुन सुदी की आठें प्रभु गर्भ में आये, माता सुषेणा देवी के भाग्य जगाये।
श्रावस्ती के जितारि नृप पिता कहलाए, कार्तिक सुदी की पूर्णिमा को जन्म प्रभु पाए।।
सौधर्म इन्द्र भक्ति से चरण में आया, पाण्डुक शिला पे प्रभु का अभिषेक कराया।
शुभ अश्व चिह्न देख सौधर्म ने कहा, सम्भव जिनेन्द्र प्रभु जी का नाम शुभ रहा।।
शुभ चार सौ धनुष की अवगाहना कही, आयु भी साठ लाख पूर्व की विशद रही।
गृहवास में रहे प्रभु ने राज्य चलाया, पतझड़ को देख प्रभु ने वैराग्य शुभ पाया।।
शुभ माघ शुक्ल पूनम को संयम पाया, केशों का लुंच करके प्रभु ध्यान लगाया।
कार्तिक वदी चतुर्थी को ज्ञान जगाए, चरणों में इन्द्र आके जयकार लगाए।
करके विहार प्रभु जी सम्मेद गिरि आए,शुभ चैत शुक्ल षष्ठी को मोक्ष सिधाए।।
अक्षय अनन्त शिव सुख पाए प्रभु नये, कर्मों का नाश करके शिवधाम को गये।
अग्नि कुमार देव ने नख केश जलाए, इन्द्रों ने सिद्धक्षेत्र पर पद चिह्न बनाए।
करते हैं भव्य अर्चना शुभ पुण्य कमाते, सम्मेद शिखर वन्दना को जीव कई जाते।।

दोहा- संभवनाथ जिनेन्द्र प्रभु, जग में हुए महान्।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करते भाव से, जिन गुण करने प्राप्त।
विशद मोक्ष पथ पर बढ़ें, बने शीघ्र ही आप्त।।

इत्याशीर्वादः

देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शास्वत तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत्र सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी ! तव चरणों में विशद नमामि।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालिस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।

श्री 1008 संभवनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है)

संभवनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।।

1. श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, अतिशय मंगल छाया है-2
पिता जितारी मात सुसेना, ने सौभाग्य जगाया है-2 संभवनाथ....
2. साठ लाख पूरब की आयु, श्री जिनेन्द्र ने पाई जी-2
धनुष चार सौ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी-2 संभवनाथ....
3. तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभु का, छियालीस गुण के धारी हैं-2
गंधकुटी में दिव्य कमल पर, जिन रहते अविकारी हैं-2 संभवनाथ....
4. पञ्चकल्याणक पाने वाले, मुक्ति पथ के नेता हैं-2
अनन्त चतुष्टय के धारी प्रभु, अनुपम कर्म विजेता हैं-2 संभवनाथ....
5. आरती करने हेतु भगवन्, दीप जलाकर लाए हैं-2
सुख-शांति सौभाग्य 'विशद' हो, तव चरणों में आए हैं-2 संभवनाथ....

प्रशस्ति

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एम् अर्हं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र शरणं प्रपद्ये, ॐ ह्रीं श्रीं यजमंतं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि वर्द्धमान पर्यन्तं आद्यानाम आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते कोटा नाम नगरे श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र चरण सान्निध्ये श्री वीर निर्वाण संवत् 2536 विक्रम संवत् 2066 शक सं. 2010 सन् 2010 मासानाम मासोत्तमासे माघ मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यां शुक्रवासरे दिनांक 13 मार्च 2010 शुभ मुहूर्त्ते मूल संघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुन्दकुन्दाचार्य परम्परायां आचार्यश्री आदिसागराय तत् पट्ट शिष्य समाधि सम्राट आचार्य महावीरकीर्ति तत् शिष्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागराय तत् शिष्य मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य भरतसागराय उपसर्गविजेता आचार्य विरागसागराय तत् शिष्य क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर पंचकल्याणक प्रभावक गुरुदेव आचार्य विशदसागराय द्वारा श्री संभवनाथ विधान सर्व जनहिताय रचितं इति भद्रं भूयात्।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहतीङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) *ब्र. आस्था दीदी*

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर